उत्सव के रंग

क्रम

उत्सव के रंग	05
गाँठ	20
वारिस	38
लाइन ऑफ़ कन्ट्रोल	56
अपने ठिये पर	67
बंतो	83
परिचय	97
कोचिंग	113
कोख	121
एहसास	135
घर	142
तीन मुलाकातें	154
डाल से टूटे	167

उत्सव के रंग

सामाजिक जीवन का सच

'उत्सव के रंग' कहानी संग्रह में तेरह कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं से साक्षात्कार कराती हैं। इन कहानियों में शोषण, अन्याय एवं संघर्ष की तस्वीरें हैं। कहानियों में खाता-पीता मध्यवर्ग है, गाँव और शहर-अपनी-अपनी पहचान के साथ मौजूद है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'उत्सव के रंग' दाम्पत्य जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करती है। जीवन के संघर्ष, उत्कर्ष एवं पति-पत्नी के बीच परस्पर सामंजस्य की कलात्मक अभिव्यक्ति है। रचनाकार ने दाम्पत्य जीवन की तस्वीर को पति-पत्नी के संवेदनशील रिश्ते के साथ, बहुत कुशलता से प्रस्तुत किया हे। कहानी का शिल्प अनकहे को कह देना है। इसी संग्रह की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है 'वारिस'। अपराध, वर्चस्व के इस दौर में यह कहानी हमारे सामने उस सच की ओर संकेत करती है, जिससे हम लगभग अनभिज्ञ हैं। कहानी में सुरेंद्र के अपराधी बनने और उसके अंत की मार्मिक दास्तान है। सुरेंद्र अपने पिता के साथ सामान्य ज़िंदगी व्यतीत कर रहा होता है, लेकिन उसका ताऊ उसे अपने अपराध एवं वर्चस्व की दुनिया का वारिस बनाता है। उसका स्वाभाविक जीवन नष्ट हो जाता है, अपराध की दुनिया की सभी बुराइयाँ उसमें आ जाती हैं। एक सीधा-सादा बच्चा हत्यारा एवं अपराधी बन जाता है और एक दिन गोलियों का शिकार हो जाता है। कहानीकार ने अपराध एवं वर्चस्व की दुनिया के लोगों की व्यक्तिगत ज़िंदगी की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की है।

रचनाकार ने बड़ी कुशलता से इस तथ्य का भी उद्‌घाटन किया है कि सुरेन्द्र नहीं चाहता कि उसके साथ उसका बेटा मनोज अपराध की दुनिया में कदम रखे। कहानी में फ्लैश बैक शैली का इस्तेमाल कथानक को प्रभावी बनाता है।

'अपने ठिये पर' इस संग्रह की एक अन्य महत्त्वपूर्ण कहानी है, यह कहानी मनुष्य के मन में पल रहे जड़ संस्कारों का पर्दाफाश करती है। एक क्रांतिकारी की कलई खोल देती है। कहानी में 'अलकेश' एक क्रांतिकारी कवि हैं। व्यवस्था परिवर्तन का प्रबल, लेकिन उसकी कथनी एवं करनी अर्थात् सिद्धांत और व्यवहार में बहुत अंतर है। वह एक युवा दलित कवि के साथ सड़े-गले सामंती संस्कारों से युक्त व्यवहार करता है। सहयोगी के स्थान पर उसके साथ नौकर से भी बदतर व्यवहार करता है। वह कहता है ''प्रकाश भाई! बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली में बैठकर जो चाहो करो, लेकिन इहां, अपने घर में, अपने ठिकाने पर हों तो सब कुछ सोचना पड़ता है। मान-मरजादा... सब जरूरी है।'' 'लाइन ऑफ कन्ट्रोल' सामाजिक सोच में हुए बदलाव की ओर संकेत करती है। कहानीकार ने एक पारिवारिक कथानक के माध्यम समाज में स्त्री की स्थिति में आ रहे बदलाव को प्रस्तुत किया है। स्त्री-जीवन से संबंधित इस संग्रह में कई कहानियाँ हैं, जिनमें 'बंतो' और 'कोख' विशेष उल्लेखनीय हैं। 'बंतो' बाल्यावस्था में ही एक अपराधी को, पिता के द्वारा विक्रय कर दी जाती है, उसका स्वाभाविक जीवन नष्ट हो जाता है, इतना ही नहीं पति की मृत्यु के बाद उसकी मर्जी के विरुद्ध उसकी सास उसे देवर से शारीरिक संबंध बनाने का हुक्म देती है। 'कोख' कहानी का कथानक पौराणिक है, लेकिन

स्त्री-जीवन की विडंबना की भयावह तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह कहानी इस तथ्य का भी उद्‌घाटन करती है कि अतीत की जिस सभ्यता एवं संस्कृति पर हमें गर्व है, स्त्री के लिए सुखद नहीं थी। सामंती व्यवस्था में स्त्री का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था, बल्कि वह वस्तु की भाँति ही थी। कहानीकार ने बड़े कलात्मक ढंग से इतिहास के उस सच से रू-ब-रू कराया है, जो प्रायः हमारी दृष्टि से ओझल रहता है। कहानी में महाभारत के भीष्म, सत्यवती, अंबा, अंबिका, अंबालिका एवं ऋषि व्यास पात्र हैं। पहले तो भीष्म के द्वारा अंबा, अंबिका एवं अंबालिका का, शक्ति के बल पर अपहरण किया जाता है। अंबा तिरस्कृत होकर आत्मदाह कर लेती है और अंबिका एवं अंबालिका को इच्छा के विरुद्ध ऋषि व्यास के पास संतानोत्पत्ति के लिए जाने को विवश किया जाता है। कहानी में सामंती परिवेश को सफलतापूर्वक उभारा गया है। 'एहसास' कहानी की स्त्री पर होने वाले अत्याचार एवं छल की मार्मिक तस्वीरें प्रस्तुत करती है; साथ ही साथ इस तथ्य का भी उद्‌घाटन करती हैं कि संघर्ष एवं संगठन के द्वारा अत्याचारी को दण्डित करा सकती है, अपनी पहचान बना सकती हैं। इस संग्रह की एक अन्य कहानी 'कोचिंग' समाज में जाति पर आधारित सड़ी-गली मानसिकता को दर्शाती है, लेकिन यह संदेश भी देती है कि हमें अपनी क्षमताओं को पहचानना चाहिए, समाज की विकृत मानसिकता का जवाब अपने व्यक्तित्व के विकास के द्वारा देना चाहिए। 'गाँठ', 'एहसास', 'डाल से टूटे' इस संग्रह की अन्य उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। 'गाँठ' कहानी स्त्री जीवन की त्रासदी के कुछ अनछुए पक्ष प्रस्तुत करती है।

नमिता सिंह का यह कहानी संग्रह कथानक, पात्र एवं शिल्प के स्तर पर विविधताओं से युक्त है। इस संग्रह की कहानियों में परिवेश भले ही भिन्न हो, लेकिन गहरे सामाजिक सरोकार हर कहानी में मौजूद हैं। कहानियों में केवल प्रश्नों को उठाया नहीं गया है, बल्कि कई जगह समाधान हेतु सकारात्मक संकेत भी हैं। कहानियों में कहानीकार की आशावादी, लेकिन यथार्थपूर्ण दृष्टि साफ झलकती है।

देवेंद्र कुमार गुप्ता

(वागर्थ-अक्टूबर, 2015)